शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १७ : अंक ३६ : नई दिल्ली : १-७ जनवरी २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी मेवाड़ के विभिन्न क्षेत्रों में सानंद विचरण करते हुए देवगढ़ पधार गए हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। पूज्य आचार्यवर स्वस्थ और प्रसन्न हैं। अहिंसा यात्रा सतत गतिमान है। आगामी १५ जनवरी को मर्यादा महोत्सव हेतु आमेट में प्रवेश होगा।

संस्मरणों का वातायन : आचार्यश्री तुलसी

(गुरुदेव तुलसी की आत्मकथा 'मेरा जीवन : मेरा दर्शन' की संपादक साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा की कलम से)

समय-प्रबन्धन का विलक्षण कौशल (८८४)

२३ जून १९९७ की रात। रात्रि के अन्तिम प्रहर का समय। गुरुदेव सदा की भांति चार बजे जाग गए। नियमित ध्यानयोग व जपयोग के बाद उत्तराध्ययन सूत्र के कतिपय अध्ययनों का सहस्वाध्याय हुआ। स्वाध्याय की तन्मयता के उस वातावरण में गुरुदेव ने बालमुनियों को ब्रह्मचर्य व्रत के बारे में अपने अनुभवपूर्ण विचार सुनाते हुए कहा 'पूज्य कालूगणी ने मुझे छोटी उम्र में दीक्षा देकर निहाल कर दिया।'

पांच बजकर पैंतालीस मिनट पर सूर्योदय हुआ। दैनिक क्रियाओं से निवृत्त होकर गुरुदेव बोथरा भवन के प्रांगण में कुर्सी पर आसीन हो गए। लगभग सवा छह बजे आचार्यश्री महाप्रज्ञ वहां पहुंचे। उन्होंने वन्दना की। गुरुदेव की मुखमुद्रा प्रसन्न थी। अपनी प्रसन्नता को अभिव्यक्ति देते हुए उन्होंने कहा 'आज वहां (तेरापंथ भवन) आ रहे हैं। साढ़े दस बजे वहां पहुंचने का विचार है।'

छह बजकर बीस मिनट पर डॉ. जेठमल मरोठी ने गुरुदेव के दर्शन किए। गुरुदेव ने पूछा 'मरोठी! आज ढीले कैसे लग रहे हो?' डॉक्टर ने निवेदन किया 'गुरुदेव! रात को १०३ डिग्री बुखार था। सारी रात नींद नहीं आई। मैंने सोचा कहीं ऐसा न हो कि गुरुदेव के दर्शन से वंचित रह जाऊं, इसलिए सुबह बुखार उतारने की गोली ले ली। अब ज्वर नहीं है।'

गुरुदेव ने अपने स्वास्थ्य के बारे में जानकारी देते हुए कहा हम बिल्कुल ठीक हैं। कल शौच स्वतः हुआ था, आज भी स्वतः हो गया। आज हम तेरापंथ भवन जाएंगे। डॉ. मरोठी ने जिज्ञासा की 'क्या वैद्यजी नहीं आए? वे अनोपचन्दजी के साथ आनेवाले थे?' गुरुदेव ने कहा 'अनोप तो लाडनूं जा रहा है।' डॉक्टर बोले 'वे आपके विहार में साथ रहनेवाले थे।' गुरुदेव ने उनको बताया कि लाडनूं में जैनविश्वभारती के अध्यक्ष का चुनाव होनेवाला है, इसलिए वह...।

डॉक्टर मरोठी यह सुनकर तत्काल लौट गए। लगभग पांच मिनट के बाद वैद्य महावीरप्रसादजी एवं उनके सहायक श्री बद्रीप्रसादजी के साथ उन्होंने पुनः दर्शन किए। दर्शन करके वे बोले गुरुदेव! मैं पहले पल्स, प्रेशर और हार्ट देख लेता हूं। गुरुदेव की स्वीकृति पाकर डॉक्टर ने जांच की। गुरुदेव उस समय सुखासन में विराजमान थे। चेक-अप करने के बाद डॉक्टर ने कहा 'गुरुदेव! आज सब कुछ नॉर्मल है। इतना नॉर्मल तो इन दिनों पहली बार आया है।'

डॉक्टर की बात सुनकर गुरुदेव ने कहा 'मैं अब लेट जाता हूं। लेटे-लेटे कैसे आता है, यह भी देख लो।' गुरुदेव पट्ट पर लेट गए। डॉक्टर ने पुनः पल्स, प्रेशर आदि का निरीक्षण कर कहा 'गुरुदेव! सब कुछ सामान्य है।' वैद्य महावीरप्रसादजी नाड़ी देखकर बोले 'गुरुदेव! सब कुछ ठीक है।' गुरुदेव ने वैद्यजी से पूछा 'आज हम तेरापंथ भवन जा रहे हैं। वहां क्रम कैसे रहेगा?' वैद्यजी ने आगे के उपचार की जानकारी दी। डॉ. मरोठी ने निवेदन

किया 'मैं विहार के समय पुनः दर्शन करूंगा।' गुरुदेव बोले 'कोई खास बात नहीं है। समय पर ही दर्शन कर सकते हो।' गुरुदेव के स्वास्थ्य की सन्तोषजनक स्थिति से सबके मन में आह्लाद था। सब अपने-अपने स्थान पर लौट गए। गुरुदेव योगासन, कायोत्सर्ग आदि ध्रुवयोगों में लीन हो गए।

लगभग साढ़े सात बजे मुनि सुमेरमलजी 'सुदर्शन' ने गुरुदेव के दर्शन किए। गुरुदेव ने पूछा आज सवेरे नहीं आए थे? मुनिश्री ने कहा 'कुछ आवश्यक काम था, इसलिए नहीं आ सका।' गुरुदेव की प्रसन्न मुद्रा देख मुनि सुमेरमलजी ने निवेदन किया 'गुरुदेव! मूलचन्दजी बोथरा के पास मघवागणी का कलाकार के हाथों निर्मित एक चित्र है। क्या गुरुदेव ने उसे देखा है?' गुरुदेव का सकारात्मक उत्तर पाकर मुनिश्री बोले 'मुझे वह चित्र बहुत सुन्दर लगा। क्या मघवागणी का वह चित्र स्वीकार किया जा सकता है?' गुरुदेव ने कहा 'महाप्रज्ञजी से पूछ लेना।' इस वार्तालाप से विरत हो गुरुदेव ने कायोत्सर्ग का प्रयोग किया।

लगभग आठ बजे अनोपचन्दजी बोथरा दर्शन करने के लिए आए। उनके साथ सात व्यक्ति और थे सोहनलालजी बोथरा, जयचन्दलालजी कोठारी, दौलतरामजी कुम्भावत, सूरजमलजी बोथरा, विमलचन्दजी बोथरा, सम्पतमलजी बैद और झंवरलालजी झाबक। दर्शन करते ही गुरुदेव ने उनसे प्रश्न किया 'सुबह जल्दी नहीं आए? डॉक्टर और वैद्यजी इन्तजार करते रहे। तुम आज डॉक्टर माथुर को भी दर्शन करानेवाले थे?' अनोपचन्दजी ने निवेदन किया 'गुरुदेव! आज लाडनूं जाना है। इन सबको साथ लेकर आया हूं। डॉ. माथुर को लाडनूं से लौटते ही दर्शन कराऊंगा।'

उस समय गुरुदेव पद्मासन में विराज रहे थे। उन्होंने कम्बल को सरकाते हुए कहा 'नजदीक से दर्शन कर लो। दूर क्यों खड़े हो?' गुरुदेव के कृपापूर्ण शब्द सुनकर सब लोग पुलकित हो उठे। वे निकट आकर गुरुदेव के चरणों में अपना सिर रखकर वन्दना करने लगे। गुरुदेव ने सबको वात्सल्यपूर्ण आशीर्वाद दिया और कहा 'समाज में कार्यकर्ताओं की कमी नहीं है। इसका सबको अनुभव होना चाहिए।'

अनोपचन्दजी गुरुदेव के स्वास्थ्य की डायरी देखने के लिए मुनि मधुकरजी के पास गए। उनसे डायरी प्राप्त कर वे उसे देखने लगे। गुरुदेव ने उनके हाथ में डायरी देखकर कहा 'क्या ब्लडप्रेशर और नाड़ी देखनी है या डायरी की रिपोर्ट?' अनोपचन्दजी बोले 'गुरुदेव! मैंने डायरी देखली। दो डॉक्टरों की जांच-रिपोर्ट दर्ज है। वह अच्छी है। आप स्वयं अच्छा महसूस कर रहे हैं, इसलिए सब अच्छा है।' यह बात सुनकर गुरुदेव ने कहा 'सब अच्छा है तो फिर सोचना क्या है। सुनो मंगलपाठ।' मंगलपाठ सुनकर वे सब लोग लाडनूं जाने के लिए विदा हो गए।

लगभग साढ़े आठ बजे मुनि मोहनलालजी (आमेट) वन्दना करने आए। गुरुदेव ने अनायास ही उनके हाथ में कुछ बादाम दिए। वे कुछ समय के लिए गुरुदेव के उपपात में बैठ गए। केलवा के विकास का प्रसंग चल पड़ा। मुनि मोहनलालजी ने निवेदन किया 'गुरुदेव! एक बार मेवाड़ पधारें और केलवा को सेवा का एक मौका दें।' गुरुदेव ने फरमाया तुम्हारा कहना तो ठीक है, पर अब...। बातचीत के सिलसिले में सिरियारी और भिक्षु-निर्वाण-द्विशताब्दी की भी चर्चा हुई। गुरुदेव ने कहा 'हमने सिरियारी जाने का भी नहीं कहा है। पता नहीं, लोग कैसे कह रहे हैं?'

वैद्यों के परामर्श से उन दिनों गुरुदेव तेल की मालिश करवाते थे। उस दिन मालिश नहीं करवाई। मैंने प्रार्थना की 'मालिश चालू रखनी चाहिए। इससे आराम मिलेगा। गुरुदेव ने फरमाया 'तुम्हारा कथन ठीक है। वैद्यजी ने भी यही कहा है।' साध्वी कल्पलताजी ने निवेदन किया 'गुरुदेव! बहनें पूछ रही हैं कि आपका तेरापंथ भवन में पधारना कितने बजे होगा? उनकी इच्छा है कि वे रास्ते में गुरुदेव के साथ रहें।' गुरुदेव ने कहा 'नहीं, इसकी जरूरत नहीं है।'

विहार का प्रसंग चल पड़ा तो मैंने जिज्ञासा की कि हम लोग गुरुदेव के साथ चलें? गुरुदेव ने पूछा 'अभी यहां रहना है क्या? लिखने का काम साथ में लाई हो?' मैंने निवेदन किया 'लाई तो नहीं, अभी मंगा लेती हूं।' गुरुदेव ने कहा 'नहीं, वहीं तेरापंथ भवन आ जाना। वहां निश्चिन्तता से काम होगा।' इसी समय साध्वी सुषमाकुमारीजी दर्शन करने आई। मैंने निवेदन किया 'गुरुदेव! तीन दिनों से इनकी तबीयत ठीक नहीं है, इसलिए मंगलपाठ सुनाने की कृपा करें।' गुरुदेव ने पूरा मंगलपाठ सुनाया। वहां उपस्थित सभी साध्वियों ने तन्मयता से मंगलपाठ सुना। मैंने दूसरा निवेदन किया कि साध्वी विवेकश्रीजी का स्वास्थ्य भी इन दिनों ठीक नहीं है। कमजोरी बहुत महसूस हो रही है।' गुरुदेव का निर्देश मिला कि उसकी अच्छी तरह जांच करा लो।

आठ बजकर पचास मिनट पर बोथरा परिवार ने एक साथ दर्शन किए। गुरुदेव ने प्रश्न किया 'क्या पूरा परिवार आ गया?' मूलचन्दजी बोथरा ने स्वीकृति दी। परिवार के छोटे बच्चों ने आगे जाकर दर्शन किए। उपासना की दृष्टि से गुरुदेव ने उनको कुछ समय प्रतीक्षा करने का निर्देश दिया।

नौ बजे गुरुदेव ने अध्ययन करनेवाले साधुओं को याद किया। मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि हिमांशुकुमारजी, मुनि योगेशकुमारजी और मुनि आलोककुमारजी आए। वे वन्दना कर गुरुदेव की सन्निधि में बैठ गए। गुरुदेव ने पूछा 'जम्बू कहां है?' गुरुदेव का आह्वान सुनकर बाल मुनि जम्बूकुमारजी आए। उन्होंने वन्दना की। गुरुदेव ने पूछा 'क्या कर रहे हो?' बाल मुनि ने निवेदन किया 'आज विहार है, इसलिए विहार की तैयारी कर रहा हूं।' गुरुदेव ने कहा 'अभी तो नौ बजे हैं। इतनी क्या जल्दी है? जाओ, अभी सीखो, अध्ययन करो।' बाल मुनि सीखने का निर्देश पाकर उठे और अध्ययन में संलग्न हो गए।

विद्यार्थी साधुओं को गुरुदेव ने दशवैकालिक सूत्र के एक पद्य की अर्थ सहित वाचना दी। वह पद्य इस प्रकार है

अप्पणट्ठा परट्ठा वा, कोहा वा जइ वा भया।
हिंसगं न मुसं बूया, नो वि अन्नं वयावए॥

मृषा शब्द की व्याख्या करते हुए गुरुदेव ने फरमाया 'मृषा का अर्थ है असत्य। आगम का शब्द है मृषा। मुनि अपने लिए झूठ न बोले, दूसरों के लिए झूठ न बोले, क्रोध के आवेश में झूठ न बोले, भयवश झूठ न बोले और हिंसाकारी झूठ न बोले। मृषा हिंसाकारिणी है। व्यक्ति झूठ बोलता है और हिंसा का प्रसंग बन जाता है। गृहस्थ लोग व्यापार/व्यवसाय में प्रायः झूठ से बच नहीं पाते, किन्तु एक मुनि को झूठ से सदा बचना चाहिए। साधु महाव्रती है और गृहस्थ अणुव्रती। एक गृहस्थ को भी जहां तक हो सके, सत्य बोलने का प्रयत्न करना चाहिए। एक साधु के लिए तो यह पद्य बहुत ही उपयोगी है और सदा आचरणीय है।'

इस व्याख्या के बाद विद्यार्थी साधुओं ने उक्त पद्य का सस्वर उच्चारण किया। गुरुदेव ने प्रसन्न होकर कहा 'छोटे बच्चों को ऐसे पद्य कंठस्थ हो जाए तो कितना अच्छा हो।'

विद्यार्थी साधुओं को आगम की वाचना देने के बाद गुरुदेव बोथरा परिवार के अभिमुख हुए। उन्होंने मूलचन्दजी के पौत्र सुबाहु के बारे में पूछा। सुबाहु ने आगे आकर वन्दना की। गुरुदेव ने उससे प्रश्न किया क्या 'लोगस्स' याद है? उसका सकारात्मक उत्तर पाकर गुरुदेव ने पुनः प्रश्न किया 'क्या शुद्ध आता है?' इस बार सुबाहु मौन हो गया। गुरुदेव ने उसे 'लोगस्स' सुनाने का निर्देश दिया। उसने खड़े-खड़े 'लोगस्स' के प्रथम पद्य का उच्चारण किया। गुरुदेव बोले 'अभी काफी सुधार की गुंजाइश है, पर निराश नहीं होना है। प्रयत्न करते रहो, सब ठीक हो जाएगा।'

गुरुदेव ने अपने निकट बैठे मुनि कुमारश्रमणजी से कहा 'तुम 'लोगस्स' का पाठ बोलो।' मुनिजी ने 'लोगस्स' का उच्चारण किया। गुरुदेव ने फरमाया 'ठीक है, पर एकदम शुद्ध नहीं है। तीन-चार जगह गलतियां हैं। उच्चारण एकदम शुद्ध होना चाहिए। शुद्ध उच्चारण गुरु के बिना आता नहीं है। देखो, 'लोगस्स' का उच्चारण इस प्रकार करना चाहिए।'

गुरुदेव ने स्वयं 'लोगस्स' का सस्वर उच्चारण किया। उच्चारण करते समय गुरुदेव भावविभोर हो उठे। उसके बाद गुरुदेव ने कहा 'उच्चारण ऐसा शुद्ध होना चाहिए। शुद्ध उच्चारण का बड़ा भारी लाभ होता है।' सन्तों ने गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

'कितने बजे हैं?' गुरुदेव ने समय के बारे में जिज्ञासा की। मूलचन्दजी बोथरा ने निवेदन किया 'नौ बजकर चौदह मिनट हुए हैं।' गुरुदेव बोले 'अभी विहार में लगभग एक घंटा शेष है।' पांच-छह मिनट का समय गुरुदेव ने बोथरा परिवार के सदस्यों को त्याग-प्रत्याख्यान कराने में लगाया। प्रसन्न वातावरण में तीस मिनट तक दुर्लभ उपासना का अवसर प्राप्त कर बोथरा परिवार ने कृतार्थता का अनुभव किया।

नौ बजकर बीस मिनट पर गुरुदेव ने अणुव्रत पाक्षिक के नवीन अंक का अवलोकन किया। राजस्थान पत्रिका के मुखपृष्ठ को देखा और कुछ मुख्य समाचार पढ़े। नौ बजकर पचीस मिनट पर मुनि मधुकरजी को याद किया। वे तत्काल उपस्थित हुए। गुरुदेव ने फरमाया 'मूलचन्दजी बोथरा त्याग-प्रत्याख्यान बहुत रखते हैं। क्या तुमने इनके त्याग-प्रत्याख्यान की तालिका बना ली?' मुनि मधुकरजी ने निवेदन किया 'गुरुदेव! आपने परसों (२१ जून) संकेत

दिया था, मैंने उसी दिन तालिका बना ली।' गुरुदेव ने वह तालिका सुनी और कहा 'बहुत अच्छे श्रावक हैं, त्यागी-वैरागी हैं।' मुनि मधुकरजी बोले 'तहत गुरुदेव! प्रारंभ से ही त्याग-वैराग्य की भावना प्रवर्द्धमान रही है।'

यह प्रसंग चल ही रहा था कि मूलचन्दजी वहां आ गए। उन्हें सामने देखकर गुरुदेव ने फरमाया 'मूलचन्दजी श्रद्धालु हैं, गंभीर हैं। इनका पूरा परिवार संस्कारी है। छोटे-छोटे बच्चों में भी अच्छे संस्कार हैं।' गुरुदेव पुनः स्वाध्याय में लीन हो गए।

बाल मुनि सन्मतिकुमारजी (तन्मयकुमारजी) ने गुरुदेव के दर्शन किए। उनके हाथ में 'पुदीना हरा' की गोलियां थीं। गुरुदेव ने पूछा 'क्या लाए हो?' बाल मुनि ने निवेदन किया कि 'पुदीना हरा' की गोलियां हैं। गुरुदेव ने पुनः पूछा 'कहां से लाए हो? और किसलिए लाए हो?' बाल मुनि बोले 'अमुक दुकान से लाया हूं। पेट में दर्द है, इसलिए इसे लेना है।' गुरुदेव ने प्रशिक्षण की भाषा में कहा 'दर्द के लिए एक-दो गोली ही बहुत हैं।' बाल मुनि ने निवेदन किया कि पेट में अनेक बार दर्द हो जाता है। गुरुदेव ने उनको समझाते हुए कहा जब जरूरत होती है, कमी थोड़े ही रहती है। बिना मतलब संग्रह नहीं करना चाहिए। आज जितनी लेनी है, रख लो। शेष अभी वापस कर देना। बाल मुनि सन्मतिकुमारजी ने 'तहत गुरुदेव!' कहकर गुरुदेव की सीख स्वीकार की। गुरुदेव का यह निर्देश असंग्रह का बोधपाठ बन गया।

दस बजे मुनि गिरीशकुमारजी भीतरी कक्ष से बाहर की ओर जा रहे थे। गुरुदेव की दृष्टि उन पर पड़ी। गुरुदेव ने कहा 'गिरीश!' गुरु के मुखारविन्द से अपना नाम सुनते ही मुनिजी के कदम रुक गए। वे गुरुदेव के निकट पहुंचे और वन्दना कर बैठ गए। गुरुदेव ने प्रश्न किया 'आजकल क्या करते हो? अखबार ही पढ़ते हो या कुछ सीखना भी करते हो?' मुनिजी ने निवेदन किया 'गुरुदेव! प्रतिदिन तीन सौ गाथाओं का स्वाध्याय करता हूं।' साहित्य भी प्रायः पढ़ता रहता हूं।' गुरुदेव ने उनको प्रतिबोध देते हुए कहा 'अखबार अधिक न देखना ही ठीक है। पूरे दिन अखबार देखना अच्छा नहीं है। साहित्य पढ़ो और वह साहित्य पढ़ो, जिससे कुछ शिक्षा मिल सके, जो जीवन के काम आ सके। जीवन को संस्कारी और पवित्र बनानेवाला साहित्य पढ़ना चाहिए।' मुनि गिरीशजी ने विनम्रता के साथ गुरुदेव के निर्देश का पालन करने की भावना व्यक्त की।

मुनि बालचन्दजी गुरुदेव के उपपात में आसीन थे। गुरुदेव ने उनसे कहा 'बालजी! ये बाजोट (पट्ट) हल्के हैं। इन्हें वहां (तेरापंथ भवन) के लिए ले लो। वहां काम आएंगे।' मुनि बालचन्दजी ने निवेदन किया 'मूलचन्दजी कह रहे थे कि इनके वार्निश होना है।' गुरुदेव बोले 'ठीक है, फिर यहीं रहने दो।' मुनि बालचन्दजी ने निवेदन किया कि दूसरे हल्के बाजोट की गवेषणा कर लेंगे। इस पर गुरुदेव ने वात्सल्य उंडेलते हुए कहा नहीं, तुम्हें नहीं लाना है। मुनि बालचन्दजी कहने लगे गुरुदेव! मैं नहीं... किन्तु... गुरुदेव ने उनको बीच में ही रोकते हुए कहा 'तुम्हारा भरोसा नहीं है। तुम अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो। पहले उसे ठीक करो। तुम्हें इतना वजन नहीं उठाना है।' 'तहत गुरुदेव!' कहकर मुनि बालचन्दजी ने गुरुदेव के कथन को स्वीकार किया। गुरुदेव के वचनों में वात्सल्य था और उनके स्वास्थ्य को लेकर जो जागरूकता थी, उससे वे अभिभूत हो गए।

दस बजकर दस मिनट पर गुरुदेव पट्ट से नीचे उतरे। सन्त विहार की तैयारी करने लगे। गुरुदेव ने पूछा 'कितने बजे हैं?' सन्तों ने निवेदन किया 'दस बजकर दस मिनट हुए हैं।' गुरुदेव ने फरमाया 'अभी पांच मिनट शेष हैं।' गुरुदेव का इंगित पाकर सन्तों ने कुर्सी पर कम्बल बिछा दिया। गुरुदेव कुर्सी पर विराज गए और मंत्र-जप में लीन हो गए। दस बजकर चौदह मिनट पर सन्तों ने निवेदन किया 'विहार का समय हो रहा है।' गुरुदेव ने जप या ध्यान सम्पन्न किया और पूछा 'क्या सवा दस बज गए?' सन्तों ने सकारात्मक उत्तर दिया। गुरुदेव बोले 'विहार की सूचना के लिए शब्द कर दो।' 'गुरुदेव का विहार हो रहा है।' इस सूचना को सुनकर सभी सन्त अपने-अपने कक्ष से बाहर आ गए। गुरुदेव ने चारों ओर ध्यान से देखा। ठीक समय पर गुरुदेव के चरण तेरापंथ भवन की ओर बढ़ चले।

चार बजे से लेकर सवा दस बजे तक घटित घटनाएं बता रही हैं कि गुरुदेव का समय-प्रबन्धन कितना विलक्षण था। उन्होंने एक-एक क्षण का सार्थक उपयोग किया। थोड़े-से समय में उनसे कितने साधु-साध्वियों और श्रावक-श्राविकाओं को प्रेरणा मिली। काश! उनका यह समय-प्रबन्धन-कौशल हम सब सीख पाते।"

•

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण आमेट की ओर

वह पंडित है...

१६ दिसम्बर। परम पावन आचार्यवर के चिताम्बा प्रवास का द्वितीय दिन। प्रातःकाल पूज्यवर ने सभी श्रद्धालुओं के घरों को अपनी चरणरज से पावन किया। अनेक अन्य घर भी पूज्यचरण का स्पर्श पाकर पवित्रता को प्राप्त हुए। पूज्यवर के इस अनुग्रह को प्राप्त कर मानों पूरा गांव प्रसन्नता के सागर में हिलोरे ले रहा था।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में चिताम्बा तेरापंथ कन्यामंडल और महिलामंडल द्वारा गीत प्रस्तुति के पश्चात् स्थानीय सभाध्यक्ष श्री मदनलाल दलाल, श्री विनीत दक, सुश्री विनीता दक ने आराध्य की अभ्यर्थना में भावाभिव्यक्ति दी। मेवाड़ कान्फ्रेन्स के अध्यक्ष श्री बसन्तीलाल बाबेल, आचार्य भिक्षु समाधि स्थल संस्थान, सिरियारी के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र सुराणा और डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

चिताम्बा में चातुर्मासिक प्रवास करने वाली साध्वी लक्ष्मीकुमारीजी ने आचार्यवर के स्वागत में अपने श्रद्धासिक्त भावों को प्रस्तुति दी। सवाईमाधोपुर चतुर्मास सम्पन्न कर गुरुदर्शन करने वाली साध्वी विद्यावती (श्रीडूंगरगढ़) 'द्वितीय' ने अपनी आन्तरिक प्रसन्नता को अभिव्यक्त करते हुए सहवर्ती साध्वियों के साथ गीत का संगान किया।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी के प्रेरक अभिभाषण के उपरान्त महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने वक्तव्य में अंग्रेजी के स्पेशल शब्द के आधार पर पूज्यप्रवर के व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने संबोधि आधारित अपने मंगल प्रवचन में जैन वाङ्मय के तीन पारिभाषिक शब्दों (बाल, बाल-पंडित और पंडित) का उल्लेख करते हुए कहा--'जिस प्राणी के जीवन में व्रत नहीं होता, वह बाल कहलाता है। चौदह गुणस्थानों में प्रथम चार गुणस्थान बाल अवस्था के हैं। संयमासंयमी श्रावक बाल-पंडित कहलाता है और सर्वविरत साधु पंडित कहलाता है। श्रावक यह सोचे कि मैं बाल-पंडित अवस्था से पंडित अवस्था को स्वीकार करूं। व्यवहार की भाषा में विद्वान को पंडित कहा जाता है, किन्तु धर्म के क्षेत्र में पंडित वही है, जो संयम को स्वीकार लेता है, जिसमें प्रेम, अहिंसा, मैत्री और अनुकम्पा की भावना परिपुष्ट होती है। व्यक्ति व्रत चेतना की जागरणा के द्वारा पांडित्य की दिशा में प्रस्थान का प्रयास करे।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'इस बार हमने साध्वी लक्ष्मीकुमारीजी का चतुर्मास चिताम्बा के लिए घोषित किया था। ये वयोवृद्धा साध्वी है। अब भी इनमें कार्य करने की लगन प्रतीत हो रही है। मानों बच्चे जैसी स्फूर्ति है। यह स्फूर्ति बनी रहे। साध्वी विद्यावतीजी (श्रीडूंगरगढ़) 'द्वितीय' आचार्य महाप्रज्ञजी के महाप्रयाण के बाद प्रथम बार आई हैं, अच्छा काम करने वाली हैं। ब्यावर चतुर्मास करने वाली साध्वी सम्यक्प्रभाजी दो दिन पूर्व ही आ गई थी। सभी साध्वियां खूब अच्छा कार्य करती रहें।' पूज्यप्रवर ने अपने प्रवचन के दौरान चिताम्बावासियों की विनय, भक्ति और समर्पण की श्लाघा करते हुए दो बक्सीसें प्रदान की। (वे पूर्व विज्ञति में प्रकाशित हैं) कार्यक्रम का संचालन श्री सुरेश दक ने किया।

मध्याह्न में भी स्थानीय श्रद्धालुओं को पूज्यप्रवर का पावन संबोध प्राप्त हुआ। आचार्यवर से पूर्व मुनि दिनेशकुमारजी ने भी जनता को प्रेरित किया। चिताम्बा में १७८ चौकों में विभक्त ५५ परिवार हैं। आचार्यवर के द्विदिवसीय प्रवास के दौरान प्रायः सभी परिवारों को आचार्यवर की उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। गांव में उत्सव का-सा माहौल रहा। आसपास के अनेक क्षेत्रों के श्रद्धालुओं ने भी इस धर्मगंगा में स्वयं को पावन बनाया।

ईशरमण्ड में ईश्वर का समागमन

२० दिसम्बर। परम श्रद्धास्पद आचार्यवर प्रातः चिताम्बा से ईशरमण्ड की ओर प्रस्थित हुए। मध्यवर्ती धुंआला गांव में पूज्यवर की प्रेरणा से अनेक ग्रामीणों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। मार्ग में भीलवाड़ा जिले से राजसमन्द जिले में पुनः पदार्पण पर अनेक श्रद्धालुओं ने पूज्यवर का आस्थासिक्त स्वागत किया। मार्गवर्ती मालकोट के ठाकुर परिवार ने भी पूज्यचरण का भावभीना स्वागत किया। मालकोट के भी अनेक ग्रामीण पूज्यप्रवर की प्रेरणा से नशामुक्त बनने हेतु कृतसंकल्प बने।

ईशरमण्ड गांव की सीमा पर मार्ग के दायीं ओर पानी में स्थित पत्थर पर एक कृष्णवर्णी सर्प जाति नयनों का विषय बन रही थी। लोगों का मानना था कि पौष कृष्णा दशमी अर्थात् पार्श्वनाथ जयंती के दिन मार्ग के

दायीं ओर नाग जाति का दिखना कोई शुभ संकेत है। पूज्यप्रवर ने कुछ क्षण रुककर उस नाग जाति की ओर अभिमुख होकर उवसग्गहर स्तोत्र और मंगलपाठ का उच्चारण किया। अपने हृदयेश्वर के पदार्पण से ईशरमण्ड का प्रत्येक श्रद्धालु प्रफुल्लित और उल्लसित था। बुलन्द जयघोषों के द्वारा वृद्ध व्यक्ति भी अपने युवाजोश को अभिव्यक्ति दे रहे थे। आचार्यवर १३.५ कि.मी. का विहार कर श्री नारायणसिंह, वीरेन्द्रपाल, महेन्द्रपाल चुण्डावत परिवार के निवास पर पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने प्रेरक वक्तव्य में कहा--आज ईशरमण्ड में आचार्यश्री महाश्रमण के रूप में साक्षात् ईशवर का पदार्पण हुआ है। इस एकदिवसीय प्रवास में भी आचार्यप्रवर की प्रेरणा को आत्मसात् कर लोग अपने जीवन की दिशा और दशा को बदल सकते हैं और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ सकते हैं।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में जनता को अणुव्रतों और बारहव्रतों को स्वीकार करने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर ने पार्श्वनाथ जयंती के प्रसंग में कहा--'आज पार्श्वनाथ जयंती है। भगवान पार्श्व से जुड़कर पौष कृष्णा दशमी का दिन भी विशिष्ट बन गया। चौबीस तीर्थंकरों में तेइसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्व प्रसिद्ध हैं। उन्हें पुरुषादानीय कहा गया। अनेक-अनेक लोग विविध मंत्रों द्वारा उनकी भक्ति, स्तुति और आराधना करते हैं। विघ्न बाधाओं के निराकरण के लिए उनकी आराधना की जाती है। यदि वीतरागता की प्राप्ति की भावना के साथ स्तुति की जाए तो वह आध्यात्मिक दृष्टि से उत्तम होता है। मैं आज पार्श्वजयंती के अवसर पर भगवान पार्श्व को सभक्ति वंदन करता हूं।'

आचार्यप्रवर ने कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों को नशामुक्ति का संकल्प भी कराया। कार्यक्रम में श्री नवरतनमल गांधी ने पूज्यवर के स्वागत में अभिव्यक्ति दी। ईशरमण्ड में तेरापंथ समाज के दो परिवारों की छह शाखाओं सहित चौदह जैन परिवार हैं। सायंकालीन आहार के पश्चात् आचार्यवर उनके घरों में पधारे और रात्रिकालीन कार्यक्रम के पश्चात् उन्हें पूज्यवर की उपासना का भी अवसर प्राप्त हुआ। पूज्यप्रवर की प्रेरणा से लोगों ने विविध संकल्प स्वीकार किए।

काकरोद के लिए दुगुना विहार

२१ दिसम्बर। आचार्यवर का आज का प्रवास ईशरमण्ड से करीब सात कि.मी. की दूरी पर स्थित ताल था। किन्तु काकरोद गांव के श्रद्धालुओं की भावना के कारण यह विहार दुगुना हो गया। पूज्यवर प्रातः पुनः मालकोट होते हुए काकरोद पधारे। चार भाईयों का हिंगड़ परिवार अपने आराध्य का स्वागत कर हर्षविभोर था। आचार्यवर ने श्रद्धालुओं के घरों का स्पर्श किया। यहां समायोजित कार्यक्रम में महिलाओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। श्री सम्पतजी हिंगड़ ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया। पूज्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में ईमानदारी, अहिंसा, समयप्रबन्धन और नशामुक्ति को हृदयंगम करने की प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों ने आचार्यवर से नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। हिंगड़ परिवार को पूज्यवर की उपासना का भी अवसर प्राप्त हुआ।

ताल बना खुशहाल

परमाराध्य आचार्यवर संक्षिप्त प्रवास के पश्चात् काकरोद से प्रस्थान कर ताल पधारे। पूज्यचरण का स्पर्श पाकर ताल का कण-कण खुशहाल था। श्रद्धालुओं के हृदय में उमड़ता हुआ श्रद्धा का ज्वार उनकी प्रसन्न मुखाकृति पर मुखरित हो रहा था। पूज्यप्रवर कुल १४.२ कि.मी. का विहार कर तेरांपथ भवन पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

तेरापंथ भवन के बाहरी चौक में समायोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में बहनों द्वारा स्वागत गीत की प्रस्तुति के उपरान्त भीम क्षेत्र के विधायक श्री हरिसिंहजी और श्री सोहनलाल माण्डोत ने पूज्यवर के स्वागत में भावपूर्ण विचार व्यक्त किए। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का प्रेरक उद्बोधन हुआ।

परम पावन आचार्यवर ने विशाल जनमेदिनी को सम्बोधित करते हुए अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आत्मा अपने कृतकर्मों के कारण अनादिकाल से एक गति से दूसरी गति में परिभ्रमण करती है। नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देव नामक इन चार गतियों में तिर्यंच और मनुष्य प्रत्यक्ष हैं, शेष दो अप्रत्यक्ष हैं। इनमें मनुष्य गति अत्यन्त

महत्त्वपूर्ण और दुर्लभ मानी गई है। जो व्यक्ति इसे नशे और बुराइयों में खो देता है, वह जीवन से हार जाता है। इस दुर्लभ जन्म का उपयोग परोपकार और सत्कार्यों में करें।' आचार्यप्रवर ने अपने प्रवचन के मध्य ताल के वरिष्ठ श्रावक श्री सोहनलाल माण्डोत की सेवाओं का भी उल्लेख किया।

ताल में १३ तेरापंथी परिवारों सहित ५० से अधिक जैन परिवार हैं। पूज्यवर सायंकालीन आहार के उपरान्त अनेक घरों में पधारे। अवशिष्ट घर दूसरे दिन विहार के दौरान पूज्यचरणों के स्पर्श से पावन बने। आचार्यवर ने विहार से पूर्व ताल के श्रद्धालुओं को उपासना का भी अवसर प्रदान किया। रात्रिकालीन कार्यक्रम में जनता की विशाल उपस्थिति रही।

पूज्यवर की मंगल सन्निधि में आज से अ. भा. तेरापंथ युवक परिषद् की नवगठित कार्यकारिणी के लिए द्विदिवसीय कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण कार्यशाला का प्रारंभ हुआ। मध्याह्न में पूज्यवर की उपासना के दौरान अध्यक्ष श्री संजय खटेड़ आदि ने परिषद् की गतिविधियों और योजनाओं की अवगति की। पूज्यवर ने कार्यशाला के संभागी युवकों को पावन संबोध प्रदान किया।

तो कल्याण निश्चित है

२२ दिसम्बर। परमपूज्य आचार्यवर प्रातः ताल से ८.१ कि.मी. का विहार कर लसानी पधारे। मार्ग में एक ओर खड़े ग्रामीण बच्चों को पूज्यप्रवर ने अपने चरण रोककर पावन प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर के पदार्पण से लसानी की जनता पुलकित और प्रमुदित थी। सर्वत्र उत्साह मूर्तिमान होता-सा प्रतीत हो रहा था। आचार्यवर का प्रवास श्री धर्मचन्द बम्बकी परिवार द्वारा निर्मित गणेश वाटिका में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर ने प्रवचन से पूर्व स्थानीय तेरापंथ कन्या मंडल, महिला मंडल और देरासारिया परिवार की बहनों ने गीत का संगान किया। स्थानीय तेयुप अध्यक्ष श्री भीकमचन्द दक और ठाकुर दिग्विजयसिंह ने पूज्यवर का स्वागत किया। स्थानकवासी समाज के श्री धर्मचन्द बम्बकी ने अपनी वाटिका में पूज्यवर का स्वागत किया। समणी वर्धमानप्रज्ञाजी ने अपने पैतृक गांव में अपने आराध्य की अभ्यर्थना की। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का प्रेरक वक्तव्य हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--आगम में महारंभ, महापरिग्रह, पंचेन्द्रिय वध और मांसाहार को नरक गति का कारण बताया गया। अत्यन्त निष्ठुरता और महान् आसक्ति का भाव प्राणी को नरक में ले जाता है। गति की निर्धारणा भावों पर आधारित होती है। भावों में निष्ठुरता और मलिनता न आए। व्यक्ति ज्यादा से ज्यादा शुभ भावों में रहने का प्रयास करे। यदि मन हमेशा शुद्ध रहे और उसमें राग-द्वेष का भाव न आए तो कल्याण निश्चित है। कार्यक्रम का संचालन श्री कुन्दनमल भटेवरा ने किया।

लसानी में ४५ तेरापंथी परिवारों सहित ६० से अधिक जैन परिवार हैं। सायंकालीन आहार के पश्चात् आचार्यवर उनके घरों में पधारे। इस दौरान स्थानीय तेरापंथ भवन में भी पूज्यप्रवर का पदार्पण हुआ। रात्रि में श्रद्धालुओं को पूज्यप्रवर की उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। पूज्यवर की प्रेरणा से विविध संकल्प स्वीकार किए गए। श्री बाबूलाल पितलिया, श्री कन्हैयालाल पितलिया और श्री शंकरलाल चावत ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया।

ठीकरवास में पावन प्रवास

२३ दिसम्बर। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः ५.१ कि.मी. का विहार कर ठीकरवास कलां पधारे। पूज्यप्रवर के पदार्पण से गांव के आबालवृद्ध खुशियों के सागर में गोते लगा रहे थे। चारों ओर अलौकिक वातावरण छाया हुआ था। सरपंच श्री आसूसिहंजी आदि गणमान्य व्यक्तियों ने पूज्यचरण की भावपूर्ण अगवानी की। आचार्यप्रवर का प्रवास तेरापंथ भवन में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल और कन्या मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। श्री प्रवीण और प्रकाश बाबेल ने अपने आराध्य की अभ्यर्थना में अभिव्यक्ति दी। स्थानकवासी समाज की ओर से श्री हंसमुख और अशोक बम्बकी ने आचार्यवर के स्वागत में विचार व्यक्त किए। श्री शंकरलाल बाबेल ने आभार ज्ञापित किया। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का प्रेरणास्पद वक्तव्य हुआ।

परम पावन आचार्यवर ने संबोधि आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'प्राणी चार कारणों से स्वर्ग में उत्पन्न होता है। सराग संयम, संयमासंयम, अकाम निर्जरा और बाल तपस्या। संख्या की दृष्टि से देखा जाए तो

मनुष्यों से देवता बहुत अधिक हैं। केवल मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षी आदि भी मृत्यु के बाद देवता बन सकते हैं। संयम और तपस्या के आधार पर प्राणी स्वर्ग में पैदा हो सकता है। भीतर में संयम और विवेक की चेतना जागृत रहे तो स्वर्ग तो स्वतः ही प्राप्त हो जाता है। साधक को स्वर्ग प्राप्ति की नहीं, मोक्ष प्राप्ति की कामना करनी चाहिए। स्वर्ग के सुख क्षणिक हैं, जबकि मोक्ष में शाश्वत सुख प्राप्त होता है। यदि जीवन में शांति और सुख है तो धरती पर ही स्वर्ग उतर आता है। अपने सदाचरणों के द्वारा आत्मकल्याण करते हुए धरती पर ही स्वर्ग को लाने का प्रयत्न करें।'

ठीकरवास कलां में तेरापंथ समाज के १८ परिवारों सहित ३६ जैन परिवार हैं। सायंकालीन आहार के पश्चात् श्रद्धालुओं के घरों में पूज्यवर का पावन पदार्पण हुआ। रात्रि में आचार्यवर ने श्रद्धालुओं को परिवारिक सेवा का अवसर प्रदान करते हुए विविध संकल्प करवाए।

शिखर पुरुष प्रज्ञाशिखर पर

२४ दिसम्बर। अध्यात्म के शिखर पुरुष आचार्यप्रवर ने प्रातः टॉडगढ़ स्थित प्रज्ञाशिखर की ओर प्रस्थान किया। मार्गवर्ती आसण (ठीकरवास खुर्द) में भी पूज्यवर का पदार्पण हुआ। यहां १२ तेरापंथी और १ स्थानकवासी परिवार है। पूज्यचरण स्पर्श से अपने गांव को पावन बना देखकर न केवल जैन अपितु जैनेतर समाज भी प्रसन्नता से सराबोर बना हुआ था। संक्षिप्त कार्यक्रम में ग्रामवासियों ने पूज्यवर के स्वागत में अभिव्यक्ति दी। आचार्यवर की पावन प्रेरणा से अनेक ग्रामीणों ने नशामुक्त बनने का संकल्प स्वीकार किया। सभी श्रद्धालु परिवारों को पूज्यवर की उपासना का अवसर प्राप्त हुआ और उनके घर भी पूज्यवर की पदरज से पावन बने।

आसण से प्रस्थान करते समय आर्तस्वर में कराहता हुआ एक पिल्ला पूज्यवर के नयनों का विषय बना। अनुकंपा के मूर्तिमान आदर्श पुरुष आचार्यप्रवर उस असहाय पशु के निकट पधारे और उसे मंगलपाठ सुनाया। किसी वाहन की टक्कर से चोटिल उस पिल्ले के मुख से खून टपक रहा था। पूज्यवर की करुणा को साक्षात् देखकर सेवार्थी भावविभोर थे।

पूज्यवर टॉडगढ़ की ओर विहार करते हुए फूतिया खेड़ा पधारे। यहां निकटवर्ती बरार गांव के श्रद्धालुओं ने पूज्यवर का भावभीना स्वागत किया। विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में बरार तेरापंथ महिला मंडल के संगान के पश्चात् श्री शांतिलाल बोराणा और स्थानकवासी समाज के श्री महावीर श्रीमाल ने भावभिव्यक्ति दी। परमाराध्य आचार्यवर ने उपस्थित जनसमूह को पावन संबोध प्रदान किया।

प्राकृतिक सुषमा से घिरे हुए और उतार-चढ़ावयुक्त घुमावदार पथ से कुल १४.२ कि.मी. का विहार करते हुए आचार्यवर अजमेर जिले स्थित टॉडगढ़ पधारे। कतारबद्ध और करबद्ध खड़े गांव के गणमान्य व्यक्तियों ने आचार्यवर की भावपूर्ण अगवानी की। पूज्यवर के पदार्पण से संपूर्ण गांव में प्रसन्नता साकार हो रही थी। आचार्यप्रवर का प्रवास पहाड़ पर अवस्थित प्रज्ञा शिखर परिसर के मुख्य भवन में हुआ। आचार्यप्रवर का स्वागत कर साहित्य संस्थान के कार्यकर्ता हर्षाभिभूत थे।

पूज्यवर से मंगलपाठ का श्रवण कर प्रज्ञाशिखर परिसर में स्थित भगवान महावीर बाल मंदिर के दो नवनिर्मित कक्षों का उद्घाटन श्री जुगराज नाहर परिवार द्वारा, प्रवास स्थल पर स्थापित आचार्यश्री तुलसी वाङ्मय दर्शन का उद्घाटन श्री देवीलाल विकासकुमार परिवार द्वारा, आचार्यश्री तुलसी कर्तृत्व दर्शन का उद्घाटन श्री उत्तमचन्द अशोककुमार कोठारी परिवार द्वारा तथा आचार्य तुलसी संकुल में स्थित महाश्रमण निकेतनम् के आचार्यश्री भिक्षु सभागृह का उद्घाटन श्री भंवरलाल ताराचन्द बांठिया परिवार द्वारा किया गया। पूज्यप्रवर प्रवचन स्थल पर पधारने से पूर्व महाशिला अभिलेख स्थल पर पधारे। यहां श्री जुगराज नाहर ने पूज्यवर से मंगलपाठ सुनकर स्वर्णाक्षरीय आलेख का अनावरण किया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में भगवान महावीर बाल मन्दिर के विद्यार्थियों की प्रस्तुति के उपरान्त टॉडगढ़ तेरापंथ महिला मंडल, श्री बद्रीलाल पितलिया और साहित्य संस्थान के मंत्री श्री भीखमचन्द 'भ्रमर' ने पूज्यवर के स्वागत में भावाभिव्यक्ति दी। पूज्यवर को आचार्य के रूप में प्रथम बार वर्धापित करने वाले मुनि मुनिसुव्रतकुमारजी ने अपनी प्रसन्नता को एक गीत के माध्यम से अभिव्यक्त किया। मुनि मदनकुमारजी के सहवर्ती मुनि कोमलकुमारजी ने भी गुरुदर्शन से प्राप्त आनंद को प्रस्तुति दी।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में मनुष्य जन्म को दुर्लभ बताते हुए उसकी प्राप्ति के चार कारणों को व्याख्यायित किया और उपस्थित जनमेदिनी को उसके सदुपयोग की प्रेरणा प्रदान की। टॉडगढ़ पदार्पण के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'आज मैं यहां गांव का स्पर्श करने के लिए नहीं आया हूं, क्योंकि यहां तो करीब चार वर्ष पूर्व परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी पधार गए थे। यहां आने का प्रथम कारण है--परम पूज्य गुरुदेव तुलसी से सम्बद्ध महाशिला अभिलेख और दूसरा कारण कहूं तो भीखमचन्दजी 'भ्रमर' के लिए यहां आया हूं। ये एक श्रद्धालु श्रावक हैं, कार्यकर्त्ता हैं, इनमें कार्य की लगन है। बीच में संकट में आ गए। मैंने सोचा कि ऐसे व्यक्ति के लिए टॉडगढ़ जाना चाहिए। मैं टॉडगढ़ आकर स्व. नेमीचन्दजी पितलिया को भी याद कर रहा हूं। वे सपत्नीक गुरुकुलवास में लम्बी उपासना किया करते थे। अच्छे श्रद्धालु श्रावक थे। टॉडगढ़ की साध्वी नगीनांजी को भी याद कर रहा हूं, वे एक अच्छी साध्वी हैं। यहां की जनता में धर्म की भावना बनी रहे। आचार्य तुलसी की स्मृति कराने वाला यह संस्थान आध्यात्मिक विकास करता रहे।'

पूज्यप्रवर ने आगे कहा--गुरुदेव महाप्रज्ञजी के महाप्रयाण के पश्चात् मुनि श्री मुनिसुव्रतकुमारजी स्वामी प्रथम बार आए हैं। ये पहले गुरुदेव तुलसी की सेवा में रहा करते थे। शासन के भक्त हैं, भक्तिमान संत हैं। स्वस्थ रहते हुए लम्बे काल तक शासन की सेवा करते रहें। इनके सहवर्ती मुनि मंगलप्रकाशजी और साथ में आए मुनि कोमलकुमारजी मेवाड़ के हैं। दोनों मुनि खूब सेवा करते रहें।

कार्यक्रम के पश्चात् आचार्यप्रवर महाप्रज्ञ निलयम् में पधारे और पुस्तकालय का अवलोकन किया। रात्रि में टॉडगढ़ के श्रद्धालुओं को पूज्यवर ने उपासना का अवसर प्रदान किया।

प्रकृति के प्रांङ्गण में

२५ दिसम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः प्रज्ञाशिखर से प्रस्थान कर विहार पथ की विपरीत दिशा में स्थित टॉडगढ़ गांव के भीतर पधारे और सभी श्रद्धालुओं के घरों को अपनी चरणरज से पावन किया। स्थानीय तेरापंथ भवन में भी पूज्यवर का पदार्पण हुआ। आचार्यवर घरों में चरणस्पर्श के दौरान स्व. नेमीचन्द पितलिया परिवार के घर में पधारे। वहां कुछ क्षण विराजमान होकर नेमीचन्दजी की धर्मपत्नी श्रीमती नैनाबाई आदि परिजनों को उपासना करवाई और प्रस्थान से पूर्व आचार्यवर ने एक पद्य फरमाया--

नेमीचन्दजी के भवन, में आए हैं आज।
पितलिया मांजी खड़ी, सिद्ध हुवो सब काज॥

आचार्यवर के मुखारविन्द से कृपापूर्ण पद्य को सुनकर नैनाबाई सहित पूरा पितलिया परिवार कृतार्थता की अनुभूति कर रहा था।

पूज्य आचार्यवर गांव के घरों की स्पर्शना के पश्चात् पुनः विहार पथ पर पधारे, तब तक करीब पौने नौ बज चुके थे। आज का विहार प्रकृतिमय था। ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों पर और उनकी तलहटी में अवस्थित विभिन्न हरे-भरे सघन वृक्ष वातावरण को रमणीयता प्रदान कर रहे थे। यत्र-तत्र स्थित खुले कुए सावधानी का संदेश लिए हुए थे। उतार और चढ़ाव से परिपूर्ण सर्पाकार पथ मानों जीवन की विविध परिस्थियों की ओर संकेत कर रहा था। पहाड़ों पर अवस्थित झोंपड़ीनुमा मकानों में रहने वाले लोग अहिंसा यात्रा को साश्चर्य निहार रहे थे। आचार्यप्रवर के समीप आने वाले अनेक व्यक्ति नशामुक्त बन गए। मार्गवर्ती मण्डावर गांव के एक जैन घर में भी पूज्यवर का पदार्पण हुआ। पूज्यवर से मंगलपाठ श्रवण कर शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण द्वार नामक काछबली के नवनिर्मित प्रवेश द्वार को श्री भंवरलाल प्रका ाचन्द मूथा परिवार ने लोकार्पित किया। आचार्यवर काछबली (खेरावड़ी) में स्थित श्री भंवरलाल ताराचन्द बांठिया परिवार के निवास पर पधारे। अपने आराध्य को अपने आंगन में पाकर बांठिया परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा था। पूज्यवर ने यहां कुछ क्षण विराजमान होकर पुनः गन्तव्य की ओर प्रस्थान कर दिया।

इस प्रकार कुल करीब साढ़े तेरह कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर लगभग साढ़े ग्यारह बजे काछबली (मेड़िया) में पधारे। पहाड़ों से घिरे हुए इस गांव में पूज्यप्रवर के पदार्पण से उल्लास और उमंग का वातावरण था। श्रद्धालुओं के हृदय में उमड़ता हुआ श्रद्धा का ज्वार उनकी प्रसन्न मुखाकृति पर अभिव्यक्त हो रहा था। आचार्यप्रवर का प्रवास श्री भंवरलाल ताराचन्द मूथा परिवार के निवास पर हुआ। यह निवास वर्तमान में श्री गंगानाथजी इन्टरनेशनल

उच्च प्राथमिक विद्यालय के उपयोग में आ रहा है। पूज्यवर का एक दिवसीय प्रवास पाकर मूथा परिवार अत्यन्त आह्लादित था।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा स्वागत गीत की प्रस्तुति के पश्चात् स्थानीय सरपंच श्रीमती ललिता खीमावत, श्री प्रकाश मूथा, सुश्री प्रेक्षा मूथा और श्री उत्तमचन्द पीपड़ा ने पूज्यवर के स्वागत में अभिव्यक्ति दी।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने प्रेरक अभिभाषण में कहा--सर्दी के मौसम में आग, भूख में सूखी रोटी, राज सम्मान आदि को भी अमृत माना गया है, किन्तु सबसे बड़ा अमृत है--संतदर्शन। अचार्यप्रवर अपने अमृत महोत्सव पर सबको अमृत बांट रहे हैं। आचार्यवर की प्रेरणा को आत्मसात् कर व्यक्ति अमरत्व की ओर गति कर सकता है।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'दुनिया में पुरुषार्थ का महत्त्व है, किन्तु नियति की उपेक्षा कर सृष्टि की सम्यक् व्याख्या नहीं की जा सकती। जैन दर्शन का एक शब्द है--पारिणामिक भाव। नियति को उसके अंतर्गत लिया जा सकता है। दुनिया के अनेक नियम हैं, जो शाश्वत हैं। जैसे--आत्मा को अनात्मा और अनात्मा को आत्मा नहीं बनाया जा सकता। मृत्यु भी दुनिया का अवश्यंभावी नियम है। हर प्राणी मृत्यु को प्राप्त होता है। मृत्यु के पश्चात् तिर्यंचयोनि में उत्पन्न होने के चार कारण बताए गए हैं-माया, गूढ़माया, असत्य भाषण और कूटतोल-कूटमाप। इन चार कारणों का सार है कि ऋजुता का अभाव व्यक्ति को पशुयोनि में ले जाता है। साधु तो असत्य और माया का पूर्ण परित्यागी होता है, किन्तु यदि गृहस्थ भी लक्ष्य बना ले तो वह झूठ और माया से काफी बच सकता है। वह व्यवसाय और व्यवहार में झूठ से बचने का प्रयास करता हुआ अपनी बुद्धि का प्रयोग पवित्र कार्यों में करे। शुद्ध बुद्धि के द्वारा आत्मोत्थान के साथ दूसरों का भी कल्याण किया जा सकता है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'मैं काछबली आकर यहां के स्व. मुनि मेतार्यजी की स्मृति कर रहा हूं। वे प्रौढ़ अवस्था में साधु बने, काफी अच्छे साधु थे। उनमें आचार्यों के प्रति समर्पण का भाव था। उन्होंने उदासर में ५८ दिनों का अनशन कर समाधिमरण का वरण किया। मुनि जिनभक्त जी को भी याद कर रहा हूं, जिन्होंने अनशन में संयम ग्रहण कर अपनी आत्मा का उत्थान किया। साध्वी कीर्तिलताजी, साध्वी शांतिप्रभाजी और साध्वी पूनमप्रभाजी भी यहीं की हैं। वे अभी दक्षिण यात्रा कर रही हैं। उनकी संसारपक्षीया भाणजी साध्वी श्रेष्ठप्रभाजी भी उनके साथ हैं। अच्छा काम करने वाली साध्वियां हैं, अच्छा काम करती रहें।'

इन्दौर के श्रावक श्री जेठमलजी कोठारी के स्वर्गवास के बाद आज उनका परिवार श्रीचरणों में संबल प्राप्ति हेतु उपस्थित हुआ। कार्यक्रम में आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'इन्दौर के श्री जेठमलजी कोठारी प्रायः हर वर्ष सपत्नीक गुरुकुलवास में सेवा किया करते थे। केलवा चतुर्मास के दौरान भी उन्होंने सेवा की थी। वे अच्छे श्रद्धालु और सेवा करने वाले श्रावक थे, प्रबुद्ध थे। वे चले गए, किन्तु परिवार के लोगों में धर्म के संस्कार बने रहें। कार्यक्रम का संचालन श्री सुरेश मूथा ने किया।

काछबली मेड़िया में १२ तेरापंथी परिवार है। सांयकालीन आहार के पश्चात् आचार्यवर उनके घरों में पधारे और रात्रि में उन्हें सेवा का अवसर प्रदान किया।

छह कि.मी. का अतिरिक्त विहार

परम पूज्य आचार्यवर का आज का प्रवास काछबली से मात्र ४ कि.मी. की दूरी पर स्थित बग्गड़ में निर्धारित था। किन्तु बग्गड़ के पार्श्ववर्ती सांगावास के श्रद्धालुओं की भावना के कारण यह दूरी करीब छह कि.मी. बढ़कर लगभग १० कि.मी. हो गई। आचार्यवर प्रातः काछबली से प्रस्थान कर सांगावास पधारे। पूज्यवर के पदार्पण से सांगावास के तीन तेरापंथी परिवारों सहित पांचों जैन परिवारों और जैनेतर समाज में भी उत्साह का माहौल था। श्री सुरेश मांडोत के निवास पर आयोजित कार्यक्रम में श्री लालचन्द मुणोत और श्री वृद्धिचन्द पोरवाल ने अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। परमाराध्य आचार्यवर ने उपस्थित जनता को पावन संबोध प्रदान किया। अनेक लोगों ने बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, अफीम आदि के सेवन का परित्याग किया। सांगावास के श्रद्धालुओं को पूज्यप्रवर की उपासना का भी अवसर प्राप्त हुआ। पूज्यवर की प्रेरणा से लोगों ने विविध संकल्प स्वीकर किए। सांगावास के जैन घरों का स्पर्श करते हुए आचार्यप्रवर बग्गड़ पधारे।

आचार्यवर के पदार्पण बग्गड़वासियों के लिए मानों सभी त्यौहारों का संगम था। सर्वत्र हर्षोल्लास छाया हुआ था। आचार्यप्रवर का प्रवास श्री शंकरलाल लादूलाल दक परिवार के निवास पर हुआ। दक परिवार पूज्यवर के इस अनुग्रह को प्राप्त कर हर्षविभोर था।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के प्रारंभ में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा स्वागत गीत का संगान किया गया। श्री मदनलाल मारू और श्री सुआलाल मुणोत ने आचार्यवर के स्वागत में अपने विचार व्यक्त किए। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का प्रेरक संभाषण हुआ।

परम श्रद्धास्पद आचार्यवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--जिसके जीवन में प्रमाद की बहुलता है, वह संसार में परिभ्रमण करता है। जो अपने जीवन में अप्रमाद के विकास का प्रयास करता है, वह संसार के परिभ्रमण को कम कर लेता है। योगरूप कषाय भी प्रमाद है। उसकी सघनता के कारण प्राणी संसार में परिभ्रमण करता है। क्रोध की अवस्था में व्यक्ति के विवेक का लोप हो जाता है और व्यक्ति कई बार गलत कार्य कर बैठता है। इसलिए क्रोध आदि कषायों से दूर रहने का प्रयास करें और प्रमाद को छोड़कर अप्रमाद जीवन जीएं। ऐसा करना श्रेयस्कर होगा। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

कार्यक्रम के पश्चात् आचार्यप्रवर नवनिर्मित महावीर भवन में पधारे और यहां कुछ क्षण विराजकर 'महावीर तुम्हारें चरणों में...' गीत का संगान किया। बग्गड़ में २१ चौकों में विभक्त १० तेरापंथी और तीन अन्य जैन परिवार हैं। सायंकालीन आहार के उपरान्त श्रद्धालुओं के घर पूज्यवर की चरणरज से पावन बने। रात्रि में पूज्यवर की उपासना के दौरान लोगों ने विविध संकल्प ग्रहण किए। श्री शंकरलाल दक ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ की कृति 'ट्रांसफॉर्म योर सेल्फ' का लोकार्पण

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञ की कृति आभामंडल का अंग्रेजी अनुवाद 'ट्रांसफॉर्म योर सेल्फ' का लोकार्पण दिनांक १८ दिसम्बर को मुनि जयकुमारजी की सन्निधि में केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री श्री कपिल सिब्बल ने किया। दिल्ली फिक्की ऑडिटोरियम में समायोजित इस कार्यक्रम के दौरान श्री सिब्बल ने अपने संभाषण में कहा--'आचार्यश्री महाप्रज्ञ एक योगी ही नहीं, अपितु महान् मार्गदर्शक भी थे। जिन्होंने अपने साहित्य के द्वारा जन-जन को आत्मावलोकन के लिए प्रेरित किया। उनकी यह कृति हमें स्वयं की पहचान कराने वाली विशिष्ट आध्यात्मिक कृति है। समारोह में मुनि जयकुमारजी, हार्पर कोलिन्स के श्री कृष्णा चौपड़ा, जै.वि.भा. विश्वविद्यालय की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञा और जै.वि.भा. के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया के भी वक्तव्य हुए। उल्लेखनीय है कि प्रस्तुत कृति का अंग्रेजी अनुवाद समणी विनयप्रज्ञाजी और प्रकाशन हार्पर कोलिन्स, पब्लिशर्स द्वारा किया गया है।

विज्ञप्ति के आजीवन सदस्यों के लिए निःशुल्क प्रेक्षाध्यान शिविर

प्रेक्षा फाउण्डेशन, जैन विश्व भारती द्वारा गत वर्ष लाडनूं में समायोजित तीन प्रेक्षाध्यान शिविरों में विज्ञप्ति के आजीवन सदस्यों के लिए आवास और भोजन की व्यवस्थाएं निःशुल्क की गई थी अनेक सदस्य फाउण्डेशन द्वारा प्रदत्त साधना के इस अवसर से लाभान्वित हुए। फाउण्डेशन द्वारा सन् २०१२ में लाडनूं में समायोजित शिविरों में भी विज्ञप्ति के आजीवन सदस्यों के लिए निःशुल्क व्यवस्थाएं की जाएंगी। शिविर की तिथियां इस प्रकार हैं--१२-१९ फरवरी, ११-१८ मार्च, ८-१५ अप्रेल, १३-२० मई, १०-१७ जून, ८-१५ जूलाई, १२-१९ अगस्त, ९-१६ सितम्बर, १४-२१ अक्टूबर, १८-२५ नवम्बर, ९-१६ दिसम्बर। स्थान सीमित है, अतः इच्छुक व्यक्ति फोन नं. ०१५८१-२२२११९ मो. नं. ०९६५६७२३४३९८ पर सम्पर्क कर अग्रिम बुकिंग करवा लें। सदस्यों को निःशुल्क व्यवस्थापूर्वक साधना का अवसर देने हेतु जै.वि.भा का हार्दिक आभार।

श्री सुरेन्द्र चोरड़िया जै.वि.भा. विश्वविद्यालय के कुलाधिपति मनोनीत

जैन विश्व भारती द्वारा आगामी कार्यकाल के लिए जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के कुलाधिपति के रूप में जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया को मनोनीत किया गया है। नवमनोनीत कुलाधिपति को आदर्श साहित्य संघ परिवार द्वारा सादर बधाई एवं आध्यात्मिक शुभकामना।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U(C) 200/2009-2011
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

परम पावन आचार्यवर का संभावित यात्रा-प्रवास कार्यक्रम

परम पावन आचार्यप्रवर का सिवांची-मालाणी क्षेत्र में जसोल चातुर्मासिक प्रवेश तक यात्रा और प्रवास का कार्यक्रम इस प्रकार रहेगा

१५ अप्रेल २०१२	करमावास	२५ मई	जेठन्तरी
१६ अप्रेल	मेली	२६ से ३१ मई	समदड़ी
१७ अप्रेल	गढ़ सिवाणा	१ जून	जेठन्तरी
१८ अप्रेल	नागणेची मंदिर	२, ३ जून	पारलू
१९ अप्रेल	ब्रह्मधाम	४ जून	उमरलाई
२०, २१ अप्रेल	आसोतरा	५ जून	रामींगमुगड़ा
२२ अप्रेल-२१ मई	बालोतरा	६-२७ जून	पचपदरा
२२ मई	जानियाना	२८ जून	बीच में
२३, २४ मई	कानाना	२९ जून	**जसोल (चातुर्मासिक प्रवेश)**

नोट :- संभावित कार्यक्रम में अपेक्षानुसार परिवर्तन किया जा सकेगा।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

२१००/- शांतिदूत आचार्य महाश्रमणजी के दो दिवसीय चिताम्बा प्रवास के उपलक्ष्य में श्री रोशनलाल, सुवालाल, सुरेशचन्द, अमरचन्द दक चिताम्बा-बैंगलोर द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती हुलासीदेवी सेठिया (धर्मपत्नी स्व. डॉ. श्री केशरीचन्द सेठिया, सुजानगढ़-कोलकाता) की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र अभयकुमार (काठमांडो), कमलकुमार (कोलकाता), सुपौत्र विनोद, मनोज, हेमन्त, अनुज प्रपौत्र हर्षवर्धन, श्रेयांस एवं दिव्यांस सेठिया द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. भंवरलालजी चोरड़िया (दिवेर-अहमदाबाद) की पुण्य स्मृति में उनके भ्राता भेंरूलाल-कंचनदेवी, सुपुत्र व पुत्रवधू पारसमल-आशादेवी, अरविन्द-निर्मला, विनोद-मधु, सुपौत्र मनोज, यश, हर्ष चोरड़िया द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री जेठमलजी कोठारी (इन्दौर) की पुण्य स्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रद्धानिष्ठ श्राविका श्रीमती शांतादेवी, सुपुत्र व पुत्रवधू निर्मल-सूर्यकान्ता, डॉ. कोमल-पुष्पा, रमेश-निर्मला, सुपौत्र आनंद, आशीष, निर्मेष, प्रपौत्र अवि, आदी कोठारी द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री भंवरलालजी बैंगानी एवं स्व. श्रीमती मांगीदेवी बैंगानी (बीदासर) की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू रमेश-राजमती, राकेश-कमला, सुपौत्र विवेक, अखिल, कुलदीप, सुपौत्री निकिता बैंगानी, दिल्ली, गुवाहाटी द्वारा प्रदत्त।

संपर्क के लिए हमारा पता है–

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक : आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, आमेट
पो. चारभुजारोड-३१३ ३३२, जि. राजसमन्द (राजस्थान) फोन : ०९६८००५५३८१, ०९३५२४०४६४१
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ E-mail : adarshsahityasangh@yahoo.com

●

प्रकाशन दिनांक : ३१-१२-२०११

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**